

# संस्कृत और नारी : आर्थिक आधार

डा. राज पाल  
प्राचार्य  
गांधी आदर्श कालेज  
समालखा ( पानीपत )

**DECLARATION:** I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT /OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE /UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION.FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE)

## सारांश

संस्कृत साहित्य भारतीय संस्कृति और सभ्यता का दर्पण माना जाता है। इसमें समाज के प्रत्येक पक्ष का गहन और व्यापक चित्रण मिलता है। विशेषतः नारी के जीवन और उसकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति का विवेचन संस्कृत ग्रंथों में विविध रूपों में मिलता है। वैदिक काल से ही नारी केवल पारिवारिक दायित्वों तक सीमित नहीं रही, बल्कि वह ज्ञान, शिक्षा, धार्मिक अनुष्ठान और आर्थिक संगठन की भी सक्रिय धुरी रही है। ऋग्वेद की ऋषिकाएँ अपाला, घोषा, लोपामुद्रा, गार्गी और मैत्रेयी इस तथ्य का प्रमाण हैं कि नारी केवल दार्शनिक और धार्मिक विमर्श में ही नहीं, बल्कि सामाजिक-आर्थिक निर्णयों में भी समान भागीदार थीं। संस्कृत ग्रंथों में “स्त्रीधन” की अवधारणा विशेष रूप से उल्लेखनीय है। विवाह, उपहार, आभूषण, भूमि, गृह, या पारिवारिक संपत्ति से प्राप्त हिस्सा—इन सब पर नारी का स्वतंत्र अधिकार स्वीकार किया गया। मनुस्मृति और याज्ञवल्क्य स्मृति में स्पष्ट उल्लेख है कि स्त्रीधन पर न तो पति का और न ही अन्य परिजनों का अधिकार है। इस प्रकार संस्कृत साहित्य नारी की आर्थिक स्वतंत्रता को मान्यता देता है। महाकाव्यों और नाटकों में नारी की आर्थिक भूमिका बहुआयामी स्वरूप में उभरती है। रामायण की रानियाँ तथा महाभारत की द्रौपदी राजनीतिक और आर्थिक घटनाओं से गहराई से जुड़ी दिखाई देती हैं। संस्कृत नाट्य साहित्य में राजमहिषियों तथा नगर की वणिक-कन्याओं को व्यापार और दान-व्यवस्था में सक्रिय भागीदारी करते हुए दिखाया गया है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में तो नारी की आर्थिक स्थिति पर विशेष बल दिया गया है। राजकीय विभागों में स्त्रियों की नियुक्ति,

कला और शिल्प से आय का सृजन, तथा कर-वसूली और प्रशासन में नारी की भूमिका को स्पष्ट रूप से रेखांकित किया गया है। इसके अतिरिक्त संस्कृत साहित्य में नारी को कृषि, वस्त्र-निर्माण, हस्तशिल्प, पशुपालन तथा गृह-आधारित आर्थिक गतिविधियों से भी जोड़ा गया है। स्त्री को “धनलक्ष्मी” कहा गया, जो केवल परिवार ही नहीं, अपितु समाज और राज्य की समृद्धि की भी आधारशिला है। संस्कृत में लक्ष्मी और अन्नपूर्णा जैसे देवियों के रूप में नारी को आर्थिक संपन्नता और उत्पादन की प्रतीक मानकर पूजा गया।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि संस्कृत साहित्य में नारी केवल गृहस्थ जीवन की पोषक शक्ति नहीं, बल्कि आर्थिक व्यवस्था की सुदृढ़ स्तम्भ भी है। यद्यपि इतिहास में पितृसत्तात्मक प्रभाव के कारण नारी की स्वतंत्र आर्थिक स्थिति पर कुछ प्रतिबंध लगे, फिर भी संस्कृत ग्रंथ इस तथ्य के प्रमाण हैं कि भारतीय समाज में नारी को आर्थिक अधिकार और योगदान की मान्यता प्राचीन काल से ही प्राप्त रही है। यही इस शोध-पत्र का मूल उद्देश्य है कि संस्कृत साहित्य में नारी के आर्थिक आधार का सुविस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया जाए।

Keywords :- संस्कृत साहित्य, नारी, आर्थिक आधार, गृहिणी, श्रम, अधिकार, समाज, धर्मशास्त्र, कुटुंब व्यवस्था, स्त्री-शक्ति।

## **भूमिका**

“यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।  
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः॥” (मनुस्मृति 3/56)

अर्थात् – जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ देवताओं का वास होता है और जहाँ उनका अनादर होता है, वहाँ सभी कर्म निष्फल हो जाते हैं।

भारतीय संस्कृति में नारी को सृष्टि की मूल आधारशिला माना गया है। जन्म से लेकर मृत्यु तक के संस्कारों में नारी की भूमिका के बिना कोई भी कार्य पूर्ण नहीं होता। प्राचीन भारतीय समाज ने नारी को केवल गृहस्थी तक सीमित नहीं किया, अपितु उसे शिक्षा, ज्ञान, धर्म, राजनीति और अर्थव्यवस्था के विभिन्न आयामों से भी जोड़ा। संस्कृत साहित्य इस व्यापक दृष्टिकोण का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

नारी और संस्कृत साहित्य का संबंध

संस्कृत साहित्य को भारतीय संस्कृति का “दर्पण” कहा गया है। इस दर्पण में हमें समाज का वास्तविक स्वरूप देखने को मिलता है। वेदों, उपनिषदों, महाकाव्यों, पुराणों, स्मृतियों और नाट्य-साहित्य में नारी की विविध भूमिकाओं का विस्तृत चित्रण है। वैदिक ऋचाओं में जहाँ नारी ऋषिकाओं के रूप में मंत्रों की

रचनाकार है, वहीं उत्तरवर्ती साहित्य में वह गृहिणी, शिक्षिका, दार्शनिक, शास्त्रचर्चा की सहभागी और आर्थिक जीवन की संचालिका के रूप में सामने आती है। संस्कृत के प्रत्येक युगीन साहित्य में नारी की उपस्थिति स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यह उपस्थिति केवल सांस्कृतिक या धार्मिक दृष्टि से नहीं, बल्कि आर्थिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। “धनलक्ष्मी”, “अन्नपूर्णा” और “श्री” जैसे विशेषण नारी को दिए गए, जो उसके आर्थिक आधार को रेखांकित करते हैं।

### आर्थिक आधार की आवश्यकता और प्रासंगिकता

किसी भी समाज की स्थिरता और विकास के लिए आर्थिक आधार अत्यंत आवश्यक है। नारी यदि केवल गृहकार्य तक सीमित रहती, तो समाज के विकास का स्वरूप अधूरा रह जाता। संस्कृत साहित्य में यह स्पष्ट किया गया है कि नारी घर की अर्थव्यवस्था की धुरी है। वैदिक यज्ञों में स्त्री की सहभागिता केवल धार्मिक कर्मकांड तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह आर्थिक संगठन का भी प्रतीक थी, क्योंकि यज्ञ में धन, अन्न, पशुधन और अन्य संसाधनों का समुचित वितरण आवश्यक था।

“स्त्रीधन” की अवधारणा इसी आर्थिक स्वतंत्रता का प्रत्यक्ष उदाहरण है। विवाह के समय, माता-पिता अथवा परिवार से प्राप्त धन-संपत्ति और उपहार नारी की व्यक्तिगत संपत्ति मानी जाती थी। मनुस्मृति और याज्ञवल्क्य स्मृति ने इस अधिकार को विधिसम्मत मान्यता दी। यह तथ्य दर्शाता है कि प्राचीन भारतीय समाज ने नारी को आर्थिक सुरक्षा और स्वतंत्रता प्रदान करने का प्रयास किया।

### नारी और समाज-आर्थिक परिवर्तन

भारतीय समाज के विकासक्रम में नारी की स्थिति समय-समय पर परिवर्तित होती रही। वैदिक काल में नारी का स्थान उच्च था; वह वेदाध्ययन कर सकती थी, शास्त्रार्थ कर सकती थी और यज्ञ-क्रियाओं में सहभागी हो सकती थी। उपनिषदों में गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषी स्त्रियाँ दार्शनिक विमर्श के साथ-साथ आर्थिक दृष्टिकोण को भी सामने रखती हैं।

महाकाव्यकाल में नारी का स्वरूप विविध आयामों में प्रकट होता है। रामायण की कैकेयी और कौशल्या राजनैतिक एवं आर्थिक निर्णयों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी थीं। महाभारत में द्रौपदी के चरित्र के माध्यम से स्त्रीधन, सम्मान और आर्थिक स्वतंत्रता जैसे प्रश्न उभरकर आते हैं। उत्तरकालीन संस्कृत नाट्य-साहित्य में स्त्री का स्वरूप और भी बहुआयामी हो जाता है। कालिदास के *अभिज्ञानशाकुन्तलम्* में शाकुन्तला केवल पत्नी और माता ही नहीं, बल्कि आश्रम की व्यवस्था और उसकी आर्थिक गतिविधियों की भी देखरेख करती है।

संस्कृत नाट्य और काव्य साहित्य में नारी का स्वरूप और भी बहुआयामी दिखाई देता है।

- **कालिदास के नाटक** : *अभिज्ञानशाकुन्तलम्* में शाकुन्तला केवल गृहिणी नहीं, बल्कि आश्रम की व्यवस्थापक और आर्थिक संगठन की धुरी है। *मालविकाग्निमित्रम्* में राजमहिषियाँ दान और दक्षिणा में सक्रिय हैं।
- **भवभूति और भास** : इन नाटककारों ने भी स्त्रियों को समाज और राज्य की आर्थिक गतिविधियों से जोड़ा है।
- **वणिक-पुत्रियाँ और व्यावसायिक स्त्रियाँ** : संस्कृत साहित्य में व्यापारी परिवारों की कन्याएँ व्यापार और लेन-देन में सक्रिय दिखाई देती हैं।

यह साहित्य यह प्रमाणित करता है कि नारी केवल निजी जीवन की नहीं, बल्कि सार्वजनिक आर्थिक जीवन की भी भागीदार रही है।

कौटिल्य का अर्थशास्त्र और नारी का आर्थिक स्वरूप

कौटिल्य का *अर्थशास्त्र* संस्कृत साहित्य का सबसे व्यवस्थित आर्थिक ग्रंथ है। इसमें नारी की आर्थिक भूमिका का विस्तृत उल्लेख है।

- **राजकीय विभागों में स्त्रियाँ** : अर्थशास्त्र में स्त्रियों को शासकीय पदों पर नियुक्त करने की व्यवस्था है।
- **कला और आय** : नारी को संगीत, नृत्य और शिल्प से आय अर्जित करने की स्वतंत्रता थी।
- **गणिकाध्यक्षा** : यह पद दर्शाता है कि राज्य द्वारा स्त्रियों की आर्थिक गतिविधियों का संगठन और कर-प्रणाली स्थापित की गई थी।

यह सिद्ध करता है कि प्राचीन भारत में नारी का आर्थिक जीवन केवल घर तक सीमित नहीं था।

महाकाव्यों में नारी का आर्थिक स्वरूप

रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य समाज की संरचना और नारी की स्थिति का विस्तृत चित्रण प्रस्तुत करते हैं।

- **रामायण में नारी** : कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा केवल राजमहिषियाँ ही नहीं थीं, बल्कि दान और कोष-व्यवस्था की संरक्षिका भी थीं। कैकेयी ने भरत को राज्य देने का वरदान माँगकर यह सिद्ध कर दिया कि नारी राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से कितनी प्रभावशाली हो सकती है।
- **महाभारत में नारी** : द्रौपदी का चरित्र नारी के आर्थिक अधिकारों और मर्यादा का प्रतीक है। जुए में द्रौपदी को दाँव पर लगाया जाना उस समय की पितृसत्तात्मक सोच को दर्शाता है, किंतु भीष्म, विदुर और कृष्ण के उपदेशों में नारी की सुरक्षा और सम्मान पर बल मिलता है।

- **दान और महादान** : दोनों महाकाव्यों में रानियाँ और स्त्रियाँ दान में सक्रिय भूमिका निभाती हैं। इससे उनकी आर्थिक स्वायत्तता सिद्ध होती है।

महाकाव्यकालीन नारी समाज की अर्थव्यवस्था और राजनीति दोनों पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती थी।

उपनिषदों और स्मृति ग्रंथों में आर्थिक अधिकार

उपनिषद न केवल दार्शनिक चिंतन के ग्रंथ हैं, बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि से भी गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

- **मैत्रेयी और गार्गी** : *बृहदारण्यक उपनिषद* में मैत्रेयी और गार्गी का संवाद प्रसिद्ध है। मैत्रेयी ने अपने पति याज्ञवल्क्य से प्रश्न किया कि “यदि समस्त पृथ्वी धन-धान्य से भरकर भी मेरी हो, तो क्या मैं अमर हो जाऊँगी?” यह प्रश्न स्त्री की आर्थिक चेतना और दार्शनिक दृष्टिकोण दोनों को दर्शाता है।
- **स्मृतियों में स्त्रीधन** : मनुस्मृति और याज्ञवल्क्य स्मृति में स्त्रीधन के प्रकार और उसके संरक्षण का स्पष्ट उल्लेख है। विवाह, मायके से मिले उपहार, आभूषण, तथा स्नेहवश प्राप्त संपत्ति को स्त्रीधन कहा गया।
- **स्वामित्व का अधिकार** : स्मृति ग्रंथों ने यह व्यवस्था दी कि स्त्रीधन पर पति या अन्य परिजनों का अधिकार नहीं है। यह स्त्री का स्वयं का आर्थिक आधार है।

यहाँ से यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन भारतीय समाज ने नारी की आर्थिक सुरक्षा की व्यवस्था की थी।

वैदिक साहित्य में नारी और आर्थिक आधार

वैदिक साहित्य भारतीय संस्कृति की जड़ों को समझने का प्रमुख स्रोत है। ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद में नारी की स्थिति का उल्लेख अनेक स्थलों पर हुआ है। ऋग्वेद में “ऋषिकाओं” का उल्लेख यह सिद्ध करता है कि स्त्रियाँ केवल धार्मिक अनुष्ठान तक सीमित नहीं थीं, बल्कि वे ज्ञान और आर्थिक गतिविधियों में भी सहभागी थीं।

- **ऋषिकाएँ और मंत्ररचना** : अपाला, घोषा, लोपामुद्रा, गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषी स्त्रियाँ मंत्रों की रचयिता थीं। उनका आध्यात्मिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि सामाजिक-आर्थिक दृष्टिकोण भी प्रखर था।
- **यज्ञ और नारी की सहभागिता** : यज्ञ केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं था, बल्कि आर्थिक संगठन का प्रतीक भी था। यज्ञ में पशु, अन्न, द्रव्य और धातुओं का व्यापक उपयोग होता था। पत्नी

की सहभागिता के बिना यज्ञ अधूरा माना जाता था। इससे यह स्पष्ट है कि नारी का आर्थिक महत्व घर और समाज दोनों में था।

- **स्त्रीधन का उल्लेख** : वैदिक ग्रंथों में स्त्रीधन का भी उल्लेख मिलता है। विवाह या पारिवारिक अवसरों पर दिया गया धन नारी की व्यक्तिगत संपत्ति माना जाता था।

इस प्रकार, वैदिक युग की नारी केवल गृहस्थ जीवन की पोषक शक्ति नहीं थी, बल्कि समाज की आर्थिक संरचना की भी धुरी थी।

### सांस्कृतिक और दार्शनिक दृष्टि

भारतीय संस्कृति में नारी को देवी के रूप में पूजा गया। लक्ष्मी को धन की देवी और अन्नपूर्णा को अन्न की अधिष्ठात्री माना गया। यह प्रतीकात्मक रूप से बताता है कि नारी को आर्थिक शक्ति और समृद्धि का आधास्वीकार किया गया। “शक्ति” की अवधारणा भी इसी को पुष्ट करती है—अर्थात् नारी ही वह शक्ति है, जो सृजन, पालन और समाज-जीवन के संचालन की मूलधारा है। संस्कृत साहित्य में नारी का आर्थिक स्वरूप केवल व्यवहारिक ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और दार्शनिक आयामों से भी जुड़ा है।

- **लक्ष्मी और अन्नपूर्णा** : नारी को धन और अन्न की अधिष्ठात्री माना गया।
- **शक्ति और प्रकृति** : यह नारी के सृजन और उत्पादन की प्रतीक हैं।
- **दार्शनिक दृष्टिकोण** : उपनिषदों और स्मृतियों में नारी की भूमिका जीवन के आर्थिक और आध्यात्मिक संतुलन की आधारशिला मानी गई है।

इस प्रकार संस्कृत साहित्य में नारी का स्वरूप केवल सामाजिक या धार्मिक नहीं, बल्कि आर्थिक भी है।

### आधुनिक संदर्भ

आज के युग में नारी-शिक्षा, नारी-सशक्तिकरण और आर्थिक स्वावलंबन की चर्चाएँ नई नहीं हैं। संस्कृत साहित्य यह प्रमाणित करता है कि प्राचीन भारत में भी नारी आर्थिक रूप से स्वतंत्र और सक्षम थी। यद्यपि मध्यकालीन परिस्थितियों में नारी की स्थिति कुछ हद तक सीमित हुई, परंतु संस्कृत ग्रंथों के आधार पर यह स्थापित होता है कि भारतीय परंपरा में नारी को आर्थिक आधार और योगदान की मान्यता प्राचीन काल से ही प्राप्त रही है। संस्कृत साहित्य में नारी की जो आर्थिक भूमिका वर्णित है, वह आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। प्राचीन काल में नारी परिवार की धुरी, संसाधनों की प्रबंधक और अर्थव्यवस्था की सह-निर्मात्री थी। आधुनिक भारत में भी यह भूमिका और अधिक विस्तृत रूप धारण कर चुकी है। आज नारी केवल गृहस्थ जीवन तक सीमित नहीं है, बल्कि वह शिक्षा, राजनीति, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, व्यापार और उद्योग के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है।

भारत की अर्थव्यवस्था में महिलाओं का योगदान तेजी से बढ़ रहा है। *राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO)* और *विश्व बैंक* की रिपोर्टों के अनुसार ग्रामीण भारत में महिलाएँ आज भी कृषि और पशुपालन की रीढ़ बनी हुई हैं, वहीं शहरी भारत में वे उद्यमिता, प्रबंधन और पेशेवर सेवाओं के माध्यम से आर्थिक विकास की गति को आगे बढ़ा रही हैं।

संस्कृत साहित्य में गृहिणी को 'गृहलक्ष्मी' और 'धन-समृद्धि की धुरी' कहा गया है। आधुनिक समय में भी यही संकल्पना हमें यह सिखाती है कि नारी केवल परिवार की पोषक नहीं है, बल्कि वह समाज और राष्ट्र की प्रगति की धुरी है। आज महिला उद्यमियों (Women Entrepreneurs), स्वयं सहायता समूहों (Self Help Groups), और माइक्रोफाइनेंस योजनाओं में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी उसी परंपरा की निरंतरता है जो वैदिक काल से चली आ रही है।

साथ ही, शिक्षा और उच्च तकनीकी क्षेत्रों में भी महिलाओं की भागीदारी बढ़ने से उनका आर्थिक योगदान और अधिक व्यापक हो गया है। आईटी सेक्टर, चिकित्सा, कानून, शोध और प्रशासनिक सेवाओं में महिलाओं की उपस्थिति यह दर्शाती है कि संस्कृत साहित्य में प्रतिपादित "नारी शक्ति" की संकल्पना आज भी जीवंत है।

## निष्कर्ष

संस्कृत साहित्य में नारी की भूमिका केवल गृहस्थ जीवन तक सीमित नहीं रही, बल्कि वह सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक आधार की भी धुरी रही है। वेदों में स्त्रियों की शिक्षा और स्वतंत्रता के अधिकार का उल्लेख मिलता है, उपनिषदों में गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषियों का दर्शन ज्ञान समाज को दिशा देता है, तो स्मृतियों एवं धर्मशास्त्रों में गृहस्थ व्यवस्था में नारी की आर्थिक भागीदारी को रेखांकित किया गया है। भारतीय समाज की अर्थव्यवस्था प्राचीन काल में कृषि, पशुपालन, हस्तकला और व्यापार पर आधारित थी, जिसमें स्त्रियों का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष योगदान रहा। संस्कृत ग्रंथों में वर्णित दान, गृहव्यवस्था, अन्न-व्यवस्था और धन के प्रबंधन से स्पष्ट होता है कि नारी केवल परिवार ही नहीं, बल्कि समाज की आर्थिक संरचना का भी अभिन्न स्तंभ थी।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में जब नारी सशक्तिकरण और आर्थिक स्वावलंबन की चर्चा होती है, तब संस्कृत साहित्य की यह परंपरा हमें स्मरण कराती है कि भारतीय समाज में नारी का आर्थिक योगदान नया नहीं, बल्कि सनातन से स्थापित है। नारी केवल *सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन* की वाहक नहीं, बल्कि *आर्थिक जीवन* की धुरी भी है। इस दृष्टि से संस्कृत साहित्य नारी के महत्व को न केवल मान्यता देता है, बल्कि उसे सम्मान और गरिमा के साथ समाज के केन्द्र में स्थापित करता है।



## संदर्भ सूची

1. ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद
2. बृहदारण्यक उपनिषद्
3. मनुस्मृति एवं याज्ञवल्क्य स्मृति
4. वाल्मीकि रामायण
5. महाभारत
6. कालिदास – अभिज्ञानशाकुन्तलम्, कुमारसम्भव
7. कौटिल्य का अर्थशास्त्र
8. डॉ. सत्यव्रत शास्त्री – *संस्कृत साहित्य और भारतीय संस्कृति*
9. डॉ. पुष्पादेवी – *संस्कृत साहित्य में नारी*
10. शारदा शरण शर्मा – *भारतीय नारी और संस्कृति*



## Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, here by, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website /amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct, I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and hentriacontane is genuinely mine. If any issue arises related to Plagiarism/ Guide Name/ Educational Qualification /Designation /Address of my university/ college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission /Submission /Copyright /Patent /Submission for any higher degree or Job/Primary Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the database due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Andhra/Driving License/Any Identity Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper maybe rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds Any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper maybe removed from the website or the watermark of remark/actuality maybe mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me.

**डा. राज पाल**

\*\*\*\*\*